हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, II Sem

विषय — हिन्दी कहानी के उद्भव एवं विकास :—

कहानी गद्य साहित्य का प्रमुख अंग है। हिन्दी-कहानी का विकास बहुत पुराना नहीं है। इसका आरम्भ इस शताब्दी के पहले दशक में हुआ है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'सरस्वती' ने कहानी लेखन को प्रोत्साहित करने में विशेष मदद पहुँचायी। बाद में कई पत्रिकाएँ केवल 'कहानी' को ही केन्द्र में रखकर निकाली गयी जिनमें 'नई कहानी' 'सारिका' आदि प्रमुख हैं। कहानी गद्य-साहित्य का प्रमुख अंग है। गद्य के विकास के लगभग पचास वर्षों बाद कहानी का उद्भव हुआ। मौलिक कहानी के त्नों को यदि कसौटी पर कस कर देखा जाय, तो नी का सूत्रपात ईसा की बीसवीं शताब्दी में माना गया। गद्य के विकास में कथा कहने की प्रवृत्ति इसमें रम्भिक लेखकों में भी दृष्टिगोचर होती है। सैयद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' रचना

शिवप्रसाद सितारेहिन्द का 'राजा भोज का सपना' तथा भारतेन्दु की 'कुछ आप बीती कुछ जग बीती' इस कोटि में आती है।

इन कहानियों में कथा के अतिरिक्त मौलिकता का कहीं भी समावेश नहीं है। मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण, पात्रों का सुन्दर समन्वय तथा कथोपकथन में नवीनता और मौलिकता का बिल्कुल भी अभाव है। उपन्यासों के समान ही कहानी का भी ईसा की बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में बंगला और अंग्रेजी कहानियों का हिन्दी अनुवाद किया गया। लेखकों में छोटी-छोटी कहानियाँ लिखने का साहस उत्पन्न हुआ और प्रतिभाशाली लेखकों को कहानी लिखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसी समय श्री किशोरीलाल गोस्वामी ने नवीन क्षेत्र में पदार्पण किया। इनकी कहानी में बंगला के भावों का आभास देखा जाता है। 'इन्दुमती' की रचना भी किसी बंगला कहानी से प्रेरणा लेकर की गई। कला की कसौटी पर यह कहानी उत्तमकोटि की नहीं मानी जाती, किन्तु हिन्दी-साहित्य के विकास में अवश्य ही महत्वपूर्ण है।

प्रथम उत्थान में हिन्दी-कहानी का अंकुर तो हो चुका था, परन्तु तब के लेखकों में कहानी

चित्रित किया। मनोविज्ञान का सुन्दर समावेश इनकी कहानियों का प्राण है। छोटे-छोटे पात्र को लेकर उसके चरित्र द्वारा उसको महान बना देना ही इनकी विशेषता है। प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी में विश्वसनीयता की स्थापना के साथ भोगे हुए जीवन के सहज रूप को ही अभिव्यंजना प्रदान की है। इस दृष्टि से उन्होंने हिन्दी कहानी को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी शैली प्रदान की। प्रेमचन्द जहाँ बहिर्मुखी कहानीकार रहे, वहीं प्रसाद अन्तर्मुखी कहानीकार थे। मानव स्वभाव के मार्मिक चित्र उनकी कहानियों में मिलते हैं। संवेदनशीलता ही उनकी कला की विशेषता है। उन्होंने पश्चिम से कहानी का ढाँचा लिया, उर्दू से एक चुस्त और धारावाहिक शैली ली और अपने चारों ओर के जीवन से प्रेरणा ली।

की ओर विशेष रुचि न होने के कारण यह अधिक उन्नति न कर पायी। लेकिन द्वितीय उत्थान में सर्वप्रथम जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' शीर्षक कहानी 'इन्दु' पत्रिका में प्रकाशित हुई तथा चण्डीप्रसाद, विश्वम्भरनाथ शर्मा, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने भी अपनी मौलिक रचनाएँ प्रस्तुत की। इन लेखकों में आदर्शवाद की प्रवृत्ति अधिक पायी जाती है। इन पर कल्पना की उड़ान, भाषा का माधुर्य तथा लौकिक भावनाओं की छाप दीखती है। इस समय के लेखकों ने सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक दृष्टिकोण को अपनाकर कहानियाँ लिखनी आरम्भ की। मुंशी प्रेमचन्द, पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', पण्डित ज्वालादत्त शर्मा, और सुदर्शन आदि इस समय के प्रतिनिधि लेखक हैं। आचार्य चतुरसेन शास्त्री, गोपाल राम गहमरी एवं गोविन्दवल्लभ पन्त ने भी हिन्दी कहानी को पूर्ण सहयोग दिया।

इस समय के प्रत्येक लेखक की अपनी अपनी विशेषता थी। प्रेमचन्द जी ने तो इस क्षेत्र में एक युगान्तर ही कर दिया। अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से उन्होंने जीवन के प्रत्येक भाग में झाँका तथा उन सबको अपनी विलक्षण प्रतिभा द्वारा